राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

ईश्वरस्य विधानेऽपि, दण्डेऽस्त्यनुग्रहः सदा ।
पश्चात्तापः स्तुतिश्चैव, दण्डं ह्रासयते ननु ॥८८॥

ईश्वर के विधान में भी दण्ड देने में अनुग्रह सदा रहता है । मनुष्य का अपने कुकर्मों पर पश्चात्ताप और ईश्वर की सच्चे मन से स्तुति ये दोनों निश्चित रूप से दण्ड में कमी करवा देते हैं ।

There is always a provision of grace for the punishment in God's legislation. If one shows remorse and glorifies God with a pure mind, then the punishment is reduced.

ईश्वरो नैव दूरेऽस्ति, सर्वत्र तस्य दर्शनम् ।
एवं मत्वा न कस्यापि, कार्या काऽपि क्षतिः क्वचित् ॥८९॥

ईश्वर दूर नहीं है । उसका तो दर्शन सर्वत्र है, ऐसा मान कर किसी की भी कोई भी क्षति कहीं नहीं करनी चाहिये ।

God is not far away. By seeing God everywhere, one should not do any harm to anybody.

उत्सवा धनिकानां हि, नित्यानन्दकरा मताः ।
महार्घतोपतप्तानां, निर्धनानां तथा न ते ॥९०॥

उत्सव तो धनवानों को ही नित्य आनन्दकारी माने गये हैं । महँगाई से पीडित निर्धनों के लिये वे उत्सव उस प्रकार आनन्दकारी नहीं हैं ।

The rich people are always happy with the festivities/celebration. The poor people who suffer due to inflation are not as happy with them.

उपभोक्ता स्वयं यावत्, संघटितो न जायते ।
तावन्न सर्वकारोऽपि, मूल्य–वृद्धिं रुणद्धि न ॥९१॥

जब तक उपभोक्ता स्वयं संघटित नहीं होता है, तब तक सरकार भी मूल्यवृद्धि को नहीं रोक सकती ।

Till the consumers are not united, the government will not stop the price hike.

उत्पद्यन्ते विलीयन्ते, विचारा विविधाः सदा ।
कार्ये परिणताश्चेन्न, को लाभोऽस्ति ततो वद ॥९२

विविध विचार सदा ही उत्पन्न और विनष्ट होते रहते हैं । यदि उन विचारों को कार्यरूप में परिणत नहीं किया तो उनसे क्या लाभ है ?

Various thoughts/ideas are always created and destroyed. What are the benefits of them if they are not used?

उपायं चिन्तयन् प्राज्ञो, ह्यपायमपि चिन्तयेत् ।
एवं यः कुरुते नैव, पश्चात्तपति भूरि सः ॥९३॥

बुद्धिमान् व्यक्ति उपाय सोचता हुआ उससे होने वाली हानि का भी विचार कर ले । जो ऐसा नहीं करता, वह बाद में बहुत पछतावा करता है ।

An intelligent person while thinking about the plan/scheme also thinks about possible negative results. The one who doesn't do that later regrets a lot.

उदात्तं चरितं येषां, गायन्ति कवयः स्वतः ।
गेयास्ते गायकास्ते च, जीवन्ति कीर्त्ति–कायतः ॥९४॥

जिनके उदात्त चरित्र को स्वयं कवि अपने आप किसी दूसरे की प्रेरणा के बिना ही गाते हैं, वे गेय पुरुष और गायक पुरुष दोनों ही अपनी कीर्त्तिरूपी काया से सदा ही जीवित रहते हैं ।

When a poet praises somebody's noble character on his own, then both, the person and the poet get the immortal body of fame.

उपास्यः सर्वधर्माणाम्, एक एवेश्वरो यदा ।
तदा तत्सेवका मूर्खा, युध्यन्ते किं मिथो वृथा ? ॥९५॥

जब सभी धर्मों का उपासनीय ईश्वर एक ही है, तो उसके मूर्ख सेवक परस्पर व्यर्थ ही क्यों युद्ध करते हैं ?

When God is the same in every religion, then why are the stupid worshippers are unnecessarily leading a war?